# 2.

# संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

# अध्याय द्वितीय

# संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

---

## 2.1 प्रस्तावना -

यह अध्ययन उन साहित्यों का पुनरावलोकन है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से शोध से संबंधित हैं। पुस्तकों, लघु शोधों,शोधों व अनुसंधानो के ध्यान पूर्वक अध्ययन के पश्चात लघु शोध से संबंधित जानकारी को संग्रहित किया, ताकि शोध संबंधित आवश्यक जानकारी लघु शोध के लिए एकत्रित की जा सके,साथ ही साथ समस्या तथा चरों के चुनाव में कोई समानता ना हो।

## 2.2 साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व-

साहित्य का पुनरावलोकन कई शोधों का संकलन है,जो हमारी शोध समस्या से संबंधित है,वास्तव में साहित्य का पुनरावलोकन पूर्व में किए गए अनुसंधानों का आलोचनात्मक अध्ययन है, यह हमारे शोध को दृष्टि प्रदान करता है। साहित्य का पुनरावलोकन निम्न क्षेत्रों में सहायता कर सकता है-

1. नए परिपेक्ष्य को प्राप्त करने तथा संतुलित करने में ।
2. योजना तथा कार्य प्रणाली के मध्य संबंध स्थापित करने में।
3. किस क्षेत्र में शोध हुए हैं अथवा किस क्षेत्र में नहीं ,इसकी जानकारी प्राप्त करने में ।
4. शोध के क्षेत्र के लिए सामान्य पद्धति की जानकारी प्राप्त करने में।
5. साहित्य के पुनरावलोकन से शोध समस्या तथा चरो के चुनाव में कोई समानता नही होती

# 2.3 समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

**एस सन्याल** (1999) में "**दृष्टिबाधित एवं शिक्षा योग्य मानसिक विकलांग बच्चों में अध्ययनरत प्रविधियों के प्रभाव का अध्ययन**" किया।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अधिगम निर्योग्य दृष्टि विकलांग बालकों पर मध्यवर्ती व्यूह रचनाओं के प्रभाव की जांच करना था। न्यायदर्श हेतु 20 अधिगम निर्योग्य दृष्टि विकलांग बच्चों को चयनित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के मध्यवर्ती व्यूह रचना हेतु सेल्फ इंस्ट्रक्शनल इंटरवेंशन स्ट्रेटजी अरियमेटिक परफॉर्मेंस का चयन किया गया। निष्कर्षतः यह पाया गया कि केवल दो बच्चों को छोड़कर अन्य सभी प्रदर्शन में मध्यवर्ती व्यूह रचनाओं के प्रयोग में सुधार पाया गया।

**वाई सक्सेना** (1999) ने "**नेत्रहीन आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत आंशिक दृष्टि बाधित बालकों पर मध्यवर्ती कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन**" किया।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य आंशिक र्दृष्टि बालकों के पठन प्रयोजन हेतु विशाल मुद्राअंकन द्वारा पठन एवं आवर्धित कांच द्वारा पठन के प्रभाव का अध्ययन करना था। न्यायदर्श 80 आंशिक दृष्टि बालकों को चयनित किया गया ।जिन्हें प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित दो समूहों में विभाजित किया गया।
निष्कर्ष का यह पाया गया कि आंशिक दृष्टि बालकों हेतु आवर्धित कांच द्वारा पठन विशाल मुद्रा अंकन द्वारा पठन की तुलना में अधिक प्रभावशाली पाया गया।

**एस.एल .साहू** (2000) में **दृष्टिबाधित बच्चों के भाषा विकास एवं संज्ञानात्मक विकास में श्रवण पठन सामग्री के प्रभाव का अध्ययन** किया। प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य दृष्टि बाधित बालकों के भाषण एवं संज्ञानात्मक विकास में श्रव्य स्पर्श सामग्री का प्रभाव देखना था। न्यायदर्श दिल्ली के नेत्रहीन विशिष्ट विद्यालय के 121 पूर्णांअंध बच्चों को चयनित किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु सामाजिक व्यक्तिगत रूप रेखा, भाषा विकास परीक्षण एवं संज्ञानात्मक विकास परीक्षण, सामाजिक-आर्थिक मापी एनसीईआरटी श्रव्य कार्यक्रम एवं दृश्य सामग्री का उपयोग किया गया तथा पाया गया दृष्टिबाधित बच्चों की भाषा विकास एवं संज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहित करने में केवलश्रव्य सामग्री की तुलना में श्रव्य स्पर्श सामग्री ज्यादा प्रभावशाली पाई गई।

**जे.पी.सिंह** (2001) ने **दृष्टिबाधित बच्चों की शिक्षा का व्यवसायीकरण में तकनीकी की भूमिका का अध्ययन** किया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य 1)विशिष्ट शैक्षिक संस्थानों में दृष्टि

विकलांग बालकों हेतु व्यवसायिक कौशलों का अध्ययन करना,2)संस्थान के बाहर के अंधे एवं दृष्टि विकलांग लोगों के कौशलों का अध्ययन करना। 3) दृष्टिबाधित के व्यवसाय हेतु नए नियमों का उत्पादन करना, 4) विशिष्ट विद्यालयों में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों हेतु ने व्यवस्थाओं का सुझाव देना। न्यायदर्श हेतु हरियाणा दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश के 29 दृष्टिबाधितों को चयनित किया गया। प्रदत संकलन प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेषण गुणात्मक किया गया। निष्कर्ष में पाया गया 1)अधिकतर दृष्टिबाधित बच्चे देर से दाखिला लेते हैं। 2) स्वरोजगार वाले दृष्टिबाधित व्यक्ति स्थिति, निर्धारण और गतिशीलता, शारीरिक दक्षता इत्यादि में निपुण हैं जो कि रोजगार का रूप है। 3) दृष्टिबाधितों के लिए सभी किस्म के रोजगार को नहीं सिखाया जा सकता,अधिकतर विद्यालयों में कढ़ाई, बुनाई, मोमबत्ती बनाने आदि काम ही सिखाया जाता है, केवल कुछ विद्यालयों में कंप्यूटर का उपयोग सिखाया जाता है। 5) दृष्टिबाधित बच्चों के प्रशिक्षण हेतु एवं प्रक्रियाओं को सुधार की आवश्यकता है।

**डॉक्टर शरणजीत कौर** के अध्ययन (2001),"**दृष्टिबाधितओं के लिए शिक्षण और सीखने की चुनौतियां**", अध्ययन के उद्देश्य 1) वर्तमान अध्ययन का आधार दृष्टिबाधित छात्रों के सामने आने वाली समस्या की पहचान करना, 2)कॉलेज में शिक्षण और सीखने की रुकावटों का पता लगाना, 3) विश्वविद्यालय में शिक्षक एवं शिक्षण सामग्री की उपलब्धता आदि की संदर्भ में जानकारी प्राप्त करना

**फ़ेल्बी मैरी ए. (2004)** ने अपने लगभग 30 वर्ष के शोध के बाद उन्होंने बताया कि विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सामान्य कक्षा में सामान्य पाठ्यक्रम के साथ शिक्षा देने से वे अपनी अधिकतम क्षमताओं का उपयोग करते हैं।

**पी.सी .विश्वास एवं ए .पांडा** (2004) ने "**समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं अवरोध का अध्ययन**" किया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य विकलांग बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान करने के प्रति अभिव्यक्ति अवरोध की खोज व उसकी प्रकृति का अध्ययन करना है। न्यायदर्श जलीश्वर(उड़ीसा) के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में कक्षा 9 व 11 में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों के शोदेश्य न्यायदर्श द्वारा चयनित किया गया। यह पाया गया कि विद्यार्थियों के दो समूहों में विकलांग बच्चों के समावेशी शिक्षा ग्रहण करने के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई।

**ममता गाइड** के अध्ययन,"**समावेशी सेटिंग एवं सामान्य शिक्षा में दृष्टिबाधित छात्र :उनके समायोजन का अध्ययन (2014)**, के उद्देश्य, वर्तमान समय में सामान्य तथा विशेष आवश्यकता

वाले विद्यालयों की व्यवस्था में क्या विभिन्नताए हैं ? सामान्य विद्यालय में दृष्टिबाधित छात्र तथा दृष्टिबाधित विद्यालयों के दृष्टिबाधित छात्रों के मध्य शोध से समावेशी शिक्षा की विद्यालय ज्यादा सफल रहे किंतु उनमें विशेष सुविधाएं प्राप्त प्रदान की जानी चाहिए।

**इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ टेक्नोलॉजी एंड इंक्लूसिव एजुकेशन** के लेख ,"**विकलांगता के प्रकार का उपयोग करके भारतीय संदर्भ में समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण "(2018)**, अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के सर्वेक्षण से विकलांगता के प्रकार का उपयोग करके भारतीय संदर्भ में समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण जानने का प्रयास किया, जिसके परिणाम स्वरुप यह ज्ञात हुआ कि शारीरिक विकलांगता के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण सामान्य हैं ,किंतु दृष्टि बाधित या मानसिक विकलांगता के प्रति उनका दृष्टिकोण नकारात्मक है।

**इप्शिता मिश्रा** द्वारा लिखित "**नेत्रहीनों के लिए समावेशी शिक्षा**" (2019) में शिक्षा को एक मौलिक मानव अधिकार माना जाता है और फिर अधिकांश नेत्रहीन भारतीयों को इस अधिकार का उपयोग कठिन लगता है। अंधापन अशिक्षा गरीबी और सामाजिक बहिष्कार का एक चित्र बनता है जिसे दृष्टिहीन दुनिया के सबसे कमजोर समूह में से एक बन जाता है जबकि सरकारी व्यापक रूप से एक समावेशी शिक्षा मॉडल बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है, वहां बहुत कुछ वांछित है।

**डॉक्टर एम.एन.जी मणि** के लेख," **दृष्टिहीन बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा की भूमिका**" अध्ययन के उद्देश्य 1)दृष्टिहीन बच्चों के लिए समान अवसर और शैक्षिक अनुभव प्रदान करें जैसा कि समान्य बच्चों के लिए प्रदान किया गया है। 2)नेत्रहीन बच्चों और उनके परिवारों, पड़ोसियों और दोस्तों को सामान्य परिस्थितियों में सामाजिक रुप से बात करने की अनुमति दें। 3)नेत्रहीनता के लिए विशिष्ट सार्वजनिक प्रतिक्रिया को यह प्रदर्शित करके बदले कि नेत्रहीन बच्चे पहले बच्चे हैं,बाद में नेत्रहीन । 4) वयस्क जीवन के अनुभवों के लिए एक प्राकृतिक आधार प्रदान करें ताकि नेत्रहीन छात्र समाज के सभी क्षेत्रों में सदस्यों के रूप में अपना योगदान दे सकेंगे।

इस अध्यन के अनुसार, बच्चे नियमित कक्षा में 80% से अधिक शिक्षण और अनुभव को आसानी से आत्मसात कर सकती हैं। यदि उन्हें सही समय पर सही सामग्री प्रदान की जाए।

**प्रशांत पलविया** के अध्ययन,"**दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमी चुनौतियां और उनकी शमन रणनीतियां**" अध्यन के उद्देश्य ,1)हाई स्कूल और कालेजों में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को उनकी शैक्षिक रणनीतियों और प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए शैक्षिक चुनौतियों का सामना करना

होता है। 2) ब्रेल की सामग्री की उपलब्धता की जानकारी प्राप्त करना, 3)वैकल्पिक स्वरूपों की उपलब्धता (जैसे-स्पर्श मॉडल)

**केली लारे** द्वारा की गई दृश्य प्रभावों पर केस स्टडी के अनुसार- **"दृष्टि,हानि की गंभीरता और शुरुआत की उम्र से प्रभावित होती है, किंतु सही उपकरण दिए जाने से दृष्टिबाधित छात्र कक्षा में सफल हो सकते है"**

## 2.4 प्रतिवर्तन

सभी शोधों के ध्यान पूर्वक अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि समावेशी शिक्षा तथा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के शिक्षण के संदर्भ में पूर्व में कई शोध हो चुके हैं, किंतु विद्यालयों में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की समावेशन की स्थिति पर कोई कार्य नहीं किया गया है। अतः शोधार्थी ने विद्यार्थियों के" **विद्यालयों में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के समावेशन की स्थिति का अध्ययन**" शोध विषय पर शोध कार्य किया।